देवबणी री बात

कृपाविस का सामुदायिक जंगल 'देवबणी/ओरण' संरक्षण अभियान

अंक 3 जून 2005

'देवबणी– ओरण'
जहॉ खग मृग बृंद अनंदित रहहीं

'देवबणी– ओरण' किसी गॉव अथवा जाति का अपना सामूहिक जंगल, जिसे सुरक्षा की दृष्टि से किसी भी–देवता के नाम से जोड़ दिया जाता। रामचरित मानस में इस तरह के जंगल 'देवबणी. ओरण' की महिमा का उल्लेख इस प्रकार है।

खग मृग बृंद अनंदित रहहीं। मधुप गुंजत छबि लहहीं।।
सो बन बरनि न सक अहिराजा।। जहॉ प्रगट रघुबीर विराजा।।

यानि 'देवबणी – ओरण' ऐसा वन है जहॉ पक्षी और पशुओं (वन्य प्राणियों) के समूह आनन्दित रहते हैं तथा भौरे (कीट पंतगे) मधुर गुजार करते हैं तथा प्रभु (देवी देवता का स्थान) विराजमान हों। अतः ओरण देवबणी के संरक्षण की अति आवश्यकता है क्योंकि देवबणी एवं ओरणों में उत्पन्न होने वाली ओषधियॉ सुरक्षित रहेगीं तथा प्राचीनकाल से उपयोग हो रही जड़ी –बुटियों के महत्व पर विचार करनें व अपनाने हेतु प्रेरणा मिलेगी।

ो नहीं प्रत्येक देवबणी/ओरण में कोई न कोई जल स्त्रोत अवश्य होता है। जो पूरे गांव जीवन का आधार होता हैं। गांव की ऐसी सार्वजनिक सम्पत्तियों के बचाव के लिये सामुहिक प्रयास अति आवश्यक है। देवबणी व ओरण साधारण परिस्थितियों में उपयोग न होने के

कारण प्राकृतिक आपदा जैसे अकाल आदि के समय में पशुओं के लिये चारे आदि में काम आती हैं।

कानूनी रूप से औरण देबणियों पर समुदायों का अधिकार नहीं हैं जिस कारण धीरे–धीरे इनका ह्रास हो रहा है। 'सरिस्का', जो वास्तव मे विभिन्न रून्ध व देवबणियों जैसे नारायणी माता, भृर्तहरि जी, पाण्डूपोल, पारासर, तालवृक्ष, जयपाल, नलदेश्वर, गरवाजी, नीलकंठ, आदि का समन्वित रूप है, यहा के बाघ समाप्त हो गये हैं। बाघ समाप्त होने का एक मुख्य कारण यह है कि इसके प्रबन्धन में यहा के समुदायों की भागीदारी नहीं रही। स्पष्ट है कि यदि स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित नहीं हुई तो राज्य के बचे–खुचे 6 प्रतिशत जंगल भी हम कही खो न दें?

कृपाविस

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान
गांव–बख्तपुरा, पो०–सिलीसेढ़ झील,
जिला अलवर – 301001 (राजस्थान)
ई–मेलः krapavis_oran@rediffmail.com

सम्पादन : अमनसिंह व प्रतिभा सिसोदिया

BOOK

घाटीतला गांव की देवबणी: जहाँ मिलती जड़ी–बूटी और चारा पाणी

घाटीतला गांव जिला अलवर, जिसमें गुर्जर जाति के 14 परिवार निवास करते हैं। गॉव के लोगों का मुख्य धन्धा कृषि एवं पशुपालन है। यह गॉव पहाड़ी की तलहटी में स्थित हैं। गांव की पश्चिम दिशा में एक पहाड़ी सघन जंगल के रूप विकसित है। जिसे 'शहीद बाबा की देवबणी' के नाम से जाना जाता है। देवबणी के नीचे एक जोहड़ है, यह जोहड़ बहुत पुराना है जो पशुओं तथा पक्षीयों एवं अन्य उपयोग हेतु पानी पीने के काम में आता है। ऐसा अनुमान है कि यह तालाब उतना ही पुराना है जितना कि इस गांव व देवबणी का इतिहास जो 150–200 वर्ष के बीच का पुराना । इस तालाब कि पाल समय की मार के साथ जर्जर हो चली थी जिसे कृपाविस संस्थान के सहयोग से पुनः ग्रामवासियो ने ठीक कर लिया है।

शहीद बाबा पर आस्था प्रकट करते हुए जयकिशन गुर्जर ने कहा कि इस देवबणी में पीर बाबा का चबूतरा था। यह चबूतरा पहले पहाड़ी पर था लेकिन बाद में बुजर्गों द्वारा इसी नीचे जोहड़ की पाल पर देवप्रतिष्ठ करवा के पांच व्यक्तियों का हाथ लगवाकर रखवा दिया गया जहाँ अब वर्तमान में रखा हुआ है। चबूतरा तो टूट गया। जोहड़ में जो पक्की दीवार है व पाल भी टूट गई थी।

इस देवबणी के पुनः संवर्धन हेतु वर्ष 2002 में यहां के समूदायों ने कृषि वं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) के साथ मिलकर पुनोत्थान के निम्न कार्य किये है :

- मिट्टी कटाव व नमी रोकने हेतु छोटे–छोटे अनेको 'टक' का निर्माण
- तालाब का गहरीकरण व इसकी पाल का पुनःनिमार्ण
- शहीद बाबा का चबूतरा का निमार्ण
- वृक्षारोपण व बीजारोपण
- सांस्कृतिक मेले का वार्षिक आयोजन
- ग्रामस्तरीय सगठन का गठन

यहां के ग्रामीण बताते हैं कि पीर बाबा की कृपा से अभी तक हमारे गांव की तन में कभी ओला नहीं गिरता और बताया कि एक बार एक जाटोली का मेव पेड़ काट कर ले गया था उसके पेड़ को हम लोग जाटोली जाकर

वापिस लाये। इस घटना के बाद जाटोली के लोग यहाँ पेड़ काटने नहीं आते हैं। केवल विषम परिस्थितियों में चारा व लकड़ी का उपयोग करते हैं। मुर्दा जलाने के लिए लकड़ी इसी देवबणी से ले जाते हैं। भण्डारा के लिये साधु आदि लकड़ी ले जा सकते हैं। इस देवबणी में चींटी की चीटावल मिलती है। इन्हे चुग्गा डालते है।

पहले इस देवबणी में बहुत से पेड़ थे लेकिन दूसरे गॉव वाले चोरी से काट ले जाते थे। इस बणी में 5–6 साल पहले एक भी पेड़ नहीं रहा था। गांव वालों को इस बात की चिन्ता हुई तो उन्होनें मिलकर आमराय बनाई कि इसमें से कोई पेड़ नहीं काटेगा और न हीं किसी को काटने देगें। जब से पेडो की संख्या में वृद्धि होने लगी है तथा कृपाविस संस्थान के सहयोग से ग्रावासियो वृक्षारोपण करके पुनः ठीक कर लिया है।

> गांव में यदि संरक्षित है – देवबणी।
> तो मिलती है – जड़ी–बूटी और चारा पाणी।।
> पारिस्थितिकी विकास के तीन धाणी।
> टिकाउ कृषि, उन्नत मवेशी और देवबणी।।

देवबणियों की प्रबन्धन व्यवस्था एवं समस्याएं

किरोड़ी कुण्ड बहुत पुरानी देवबणी है इसमें मंन्दिर भी है जो पहले राजाओं के समय निर्माण करवाया था लगभग 400 वर्ष पुराना है। यहां पर महात्मा ने तपस्या की थी तो उन्होने ही उस दौरान इसका नाम किराड़ी कुण्ड रखा था। इसमें एक पानी का कुन्ड भी है जो पानी पहाड़ से आता है। यहां हमेशा पानी रहता हैं यहॉ के महात्मा श्री रामलखन दास ने बताया कि यहा आज भी गुप्त महात्मा रहते है जो कभी कभी कोई भी भाग्यशाली मनुष्य होता है उसे इनके दर्शन भी हो जाते है । इसका 40 बीधा का [illegible]बा है जो देवबणी का है। इसमें कई प्रकार के पौधे हैः [illegible]से आम, नीबू, बरगद, नीम, पीपल, टीडू, सहजना, शीसम, गुगल, गुलर, शिरनी, कमद, धौंक, सालर आदि। इस देवबणी में जंगली प्राणी भी है मोर, रोज, नीलगाय, भेड़िया, जरख, सियार, लोमड़ी वीजू नेवला, जंगली बिल्ली, पहले बघेरा भी था, अब नहीं है।

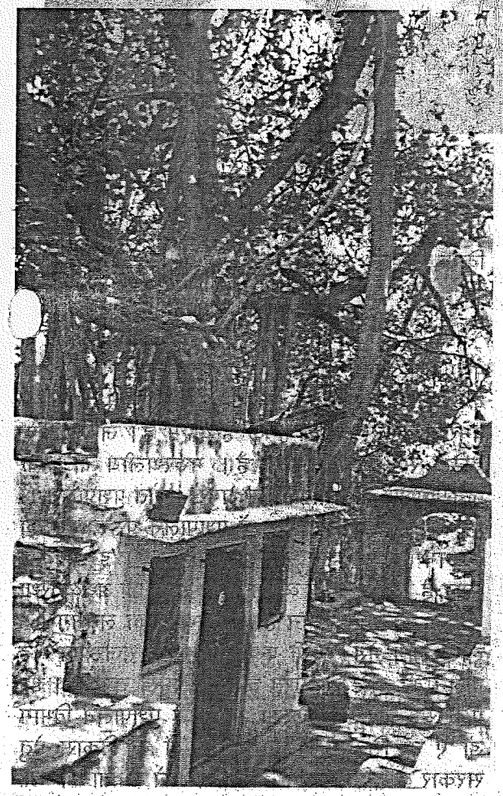

देवबणी में बहुत सारी जड़ी बूटी है जिनका उपयोग महात्मा जी करते हैं जैसे बच्चों के स्पेशल दवा देते है। इस देवबणी में मेला भी लगता है, जो जन्मान्ष्मी को लगता और यहा कुस्ती भी होती है और बहुत सारे गांवों से लोग मेला में आते हैं। गांव जांगरू के देवबणी में चुग्गा के लिए प्रति परिवार 5 किलो अनाज देता है, वर्ष में एक बार। देवबणी की मान्यता पहले लोगों बहुत थी लोग देवबणी को बचाते थे। लेकिन अब लोगो की देवबणी के प्रति रूची नहीं है। और देवबणी में नुकसान भी होता है। महात्मा जी का कहना है कि जब से वन विभाग का यहां पर आवागमन 1978 से हुआ है और वन विभाग का यहां आने से देवबणी में नुकसान चालू होने लगा क्योकि वन विभाग के कुछ लोगों रिश्वत खोरी करते है। जिसके कारण देवबणी में बहुत पेड़ों का कटाव होने लगा और यहां से पत्थर – रोड़ी जाने लगी और बहुत नुकसान होने लगा और आज भी नहीं रूक पाया। देवबणी को लेकर महात्मा जी श्री रामलखन दास ने कई बार वन विभाग के अधिकारियों से मुलाकात की और बड़े अधिकारीयों तक अवगत करवाया है। कोई फायदा नहीं हुआ।

नागलबणी गांव की देवबणी का क्षेत्रफल लगभग 25 बीधा है। यहां पर खेल व कुआ है। डुगरी के ऊपर माता का मन्दिर तथा यहां जाने के लिये सिड़ी बनी हुई है। 360 सीड़ी है। इस देवबणी में अनेक प्रकार के पेड़ पौधे पाये जाते है जैसे धोंक, रोन्ज, जाल, पापड़ी, छीला, आकड़ । यहां पेड काटना मना है। अगर कोई पेड़ काटता है तो उसको माता जी नुकसान पहुचाती है ।

इस देवबणी में वन्य प्राणी भी पाये जाते है। जैसे बन्दर, मोर, सांप तीतर, लोमड़ी बगेरा आदि। यहां पर गांव के पशु चरते है, तथा गांव के लोग कहते हैं कि जब कोई मर जाता है तब ही यहां से लकड़ी लाते है। अन्यथा इस जंगल से लकड़ी नहीं लाते है।

नागल बानी गांव के लोग लीलाराम प्रजापति, सुरेश खटीक का कहना है कि इस देवबणी का कोई राजा महाराजाओं के टाईम का है यहां राजाओं की टुकड़ी थानागाजी में रहती थी वह पूजा अर्चना करती । इस

शेष पेज 5 पर.......

चरवाहा समुदायों का राज्य स्तरीय साझा आन्दोलन

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) द्वारा बख्तपुरा, अलवर द्वारा आयोजित चरवाहा समुदायों की राज्य स्तरीय दो दिवसीय कार्यशाला बख्तपुरा में 13 जून 2005 को सम्पन्न हुई। इस कार्यशाला में जोधपुर, पाली, जालौर, जयपुर, चितौड और अलवर जिलों से चरवाहा समुदायों के 50 प्रतिनिधियों भाग लिया। कार्यशाला का उदघाटन पाली जिले में पशु पालकों के बीच कार्यरत निश्त प्रसिद्ध डॉ इल्से ने किया। कार्यशाला का संचालन कृपाविस के मुख्य समन्वयक एंव अशोका फैलो श्री अमन सिंह ने किया।

कृपाविस निदेशक श्रीमति प्रतिभा सिसोदिया ने अपने सम्बोधन में इस कार्यशाला को राज्य स्तर पर चरवाहा समुदायों को संगठित करने की एक पहल बताया। कार्यशाला के प्रथम सत्र में पशुपालक विभाग के डॉ सीताराम वर्मा तथा गुर्जर चरवाहा समाज के दौलत राम गुर्जर ने अफीका में हुए चरवाहा समुदायों के विश्व स्तरीय सम्मेलन के अनुभवों को कार्यशाला में प्रस्तुत किया । दूसरे सत्र में अफीका से संयुक्त संघ से सम्बन्ध प्रतिनिधि दाउदत्तरी ने विश्व स्तर पर चरवाहा समुदायों में विकास को लेकर हो रहे प्रयासों पर प्रकाश ड़ाला ।

जोधपुर से पधारे अखिल भारतीय पशुप्रकोस्ट महासभा के संयोजक श्री भोपालराम देवासी ने राजस्थान में चरवाहा समुदायों की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया। रईका चरवाहा समुदाय महासभा के अध्यक्ष श्री बगदी राम रईका ने पशु निस्क्रमण के दौरान होने वाली समस्याओं को रखा।

पशुपालक विभाग के उप निदेशक डा. महेश चन्द कटारा ने बताया कि राज्य में पशुपालन व्यवसाय प्रमुखतया ऐसे व्यक्तियों के हाथों में हैं। जो आर्थिक द्वस्टि से कमजोर वर्ग है। मरुस्थलीय क्षेत्र के जनसाधारण की जीविका का प्रमुख स्त्रोत पशुपालन ही है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था में पशुपालन प्रसंस्करण का लगभग 19 प्रतिशत योगदान रहता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि पशुपालन व्यवसाय का राज्य की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूण स्थान है। राजस्थान का लगभग 2.5 लाख लोग भेड़–बकरी पर आश्रित हैं। राजस्थान भेड पालन की द्वष्टि से भारत का एक प्रमुख राज्य है। डॉ. ए.के.सिह वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी पशुपालन विभाग डॉ ए के सिंह ने चरवाहा समुदायों के विकास हेतु सरकार के द्वष्टिकोण व नीतियों के बारे में बताया। डा.

महेश चन्द कटारा ने चरवाहों की समस्याओं को उच्च स्तर तक पहुचाने का आश्वासन दिया।

दूसरे दिन के अतिम सत्र में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यकम नई दिल्ली के कार्यकम अधिकारी श्री सिलिव्यो सिमोनित ने अपने सम्बोधन में भारत सरकार राज्य सरकार तथा संयुक्त रास्ट्र विकास कार्यकम के बीच हो रहे चरवाहा समुदायों के विकास प्रयासो के बारे में बताया तथा चरवाहों के हित में निति निर्धारण पर विशेस जोर दिया।

पश्चिमी राजस्थान में चरवाहा समुदायों के बीच कार्यरत लोकहित पशुपालक संस्थान के निदेशक श्री हनुमंत सिहं राठोड़ ने राज्य स्तर पर चरवाहा समुदायों के गठन बनाने की प्रकिया समझाई।

अन्त में पशु पालकों ने सुझाव रखे कि साझा आन्दोलन संगठन की क्यो आवश्यकता हैं :

1. पशु पालकों की एकता
2. समस्याओं का समाधान
3. जगल 'देवबणी–ओरण' एवं पर्यावरण के बचाव हेतु
4. संगठन से शक्ति
5. पशुपालकों की आवाज बुलंदी
6. मार्केटिंग बाजार
7. संस्कृति के बचाव
8. रोजगार के अवसर
9. सुचना का आदान – प्रदान
10. स्थानीय पशु नस्लों का संरक्षण
11. सरकारी तंत्र पर दबाव
12. सर्म्पक सुत्र का बढावा
13. पशुपालको की पहचान बढाने
14. नई पीढी को पशुपालन में प्रोत्साहन
15. भष्टाचार पर रोक
16. समाजिक चेतना को बढावा
17. नेतृत्व को बढावा
18. कालाबाजारी समाप्त
19. परम्परागत संसाधनो को संरक्षण
20. आत्म विश्वास

कार्यशाला में भाग ले रहे चरवाहा समुदायों के प्रतिनिधियों ने एकमत होकर 'राजस्थान चरवाहा विकास संस्थान' नाम से एक संगठन का गठन कार्यशाला में किया।

पेज 3 का शेष...........

देवबणी में मास का मेला भरता है। व चैत की आठ को इसमें मेला होता है। जिसमें कुस्ती व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम होते है।

गांव अंगारी की देवबणी में पानी का एक कुण्ड है जो कुआं नुमा है और पानी अन्दर ग्राउण्ड बहता रहता है । इस देवबणी में पेड़ पौधे मन्दिर लगभग 35 बीगा में है इस देवबणी में अनुक प्रकार के वृक्ष है। खजूर, छिला, पापड़ी गुलर, कडीमाला, रोज, बड, आम आदि जाति क पेड़ हैं इस देवबणी में जो लकड़ी हाती हैं वह गांव वाले काम नहीं लेते बस यहां के काम आती और भण्डारा में काम में ली जाती है। इस देवबणी में पहले आम, खजूर, पापडी, अधिक मात्रा में थे लेकिन अब खत्म हो गये है। पुराने होने के कारण व दीमक लगजाने के कारण अब महात्मा ही ने नये पौधे लगाये हे पीपल व नीम के ।

इस देवबणी में महात्मा बाबा सीदाई नाथ जी कहते है कि अनमोल जड़ी–बूटियां संपूर्ण समुदायों के स्वास्थ्य की रक्षक तथा चमत्कारिक गुण दूध स्वास्थ्य के अनुपम प्रबंध की कहानी है। उपरी–पराई का भी इलाज बताते है। महात्मा जी ने बताया की गांव के लोगो की देवबणी के प्रति कम होती चली जा रहीं है। और लोग देशी दवा को भूल रहे है। अंग्रेजी दवाईयों के पीछे अधिक दौड़ते है। लेकिन देशी दवा से तो उपचार सही होता है। धीरे–धीरे होता है लेकिन रोगों को जड़ से नष्ट कर देती है। लेकिन वह बीमारी जड़ से नही जाती और दौबारा होने का खतरा रहता है। इस देवबणी में गांव के पशु चारा चरते है । देवबणी के नीचले स्थान पर जोहड़ भी बना है। जो पशुओं के पानी पीने के काम आता हैं।

कृपाविस द्वारा अलवर जिले के ओरण–देवबणी पर किये गये अध्ययन का सार

'देवबणी या ओरण' जैव–विविधता प्रबन्धन की एक जीवंत परम्परा है। जिसनें ग्रामीण समुदायों की आस्था व संस्कृति के सहारे सदियो से जंगल व वन्य प्राणियों को बचाये रखा है। लेकिन आधुनिकता तथा सरकारी नीति के चलते आज ओरण पर कानूनी रूप से समाज का और समाज द्वारा चुनी पंचायत का भी कोई अधिकार नहीं है। इसी कारण से ओरण के संरक्षण में स्थानीय ग्रामीणों की आज खास रूचि नहीं दिखाई देती।

कृपाविस का प्रयास शुरू से ओरण व देवबणियों के संरक्षण के प्रति रहा है, जिसे वर्तमान में एक अभियान के रूप में उठाया है। देवबणियों व ओरणों पर समाज तथा पंचायत का अधिकार हो तथा ओरण व्यवस्था पुनःस्थापित हो, इस हेतु कृपाविस ने अलवर जिले की देवबणियों/ओरणों के सर्वेक्षण का काम भारत सरकार के पर्यावरण व वन मन्त्रालय, पर्यावरण शिक्षण केन्द्र तथा विश्व संघ विकास कार्यक्रम के आर्थिक सहयोग से शुरू किया। इस सर्वे से अलवर में 163 ओरण/देवबणियों की अवस्थिति ज्ञात हुई। जिनमें से लगभग 50 प्रतिशत ओरण/देवबणियो का विस्तार से अध्ययन किया गया।

विभिन्न संस्थाओं के द्वारा किये गये सर्वेक्षण के आधार पर एक अकलन के अनुसार राजस्थान में लगभग एक लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल पर ओरण स्थित है जिनकी संख्या लगभग 1100 है।

गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली द्वारा एक सर्वे के आधार पर बाड़मेर ज़िले की करीब 41 प्रतिशत पशुओं का आश्रय स्थल हैं। जबकि अलवर जिले के जंगल आधारित पशुपालन का प्रतिशत इससे भी ज्यादा है।

उन्नत मवेशी, घर भर देसि।
बेकार मवेशी, जंगल –जमीन बर्बाद कर देसि।।

कृपाविस अध्ययन से साबित होता हैं कि प्रत्येक देवबणी/ओरण में कोई न कोई जल स्त्रोत अवश्य होता है। अलवर जिले में 31 प्रतिशत देवबणियों में परम्परागत जोहड़/तालाब है, जबकि 17 प्रतिशत मे कोई झरना या बरसाती नदी बहती है 38 प्रतिशत देवबणियॉ ऐसी है जिनमें बावड़ी या कुआं पाया जाता है जबकि 14 प्रतिशत में नल/बोरिंग हो गये हैं।

अलवर जिले की देवबणियों/ओरणों में 57 प्रजातियॉ वन्य पशुओं की तथा 29 प्रजातियॉ पक्षियों की पाई जाती है। तथा अलवर जिले में खुश्क पतझड़ी प्रकार के वन पाए जाते हैं। ओरण/देवबणियों में विभिन्न तरह के औषधिय गुण की लगभग 100 प्रजातियॉ पाई जाती हैं

ओरण देवबणियों से औषधीय महत्व के वृक्ष निरन्तर विलुप्त जिले की समस्त ओरण–देवबणियो की स्थिति पेड़ पौधों की द्वष्टि से सन्तोष प्रद नहीं है तथा ओरण–देवबणियों से औषधीय महत्व के वृक्ष जैसे नीम, सालर, वट, पीपल, छितरीली धोक, कैर, शीरस, छील, हिगोट, बेलपत्र, सदाहरी पीले फूल, गूलर, पीलू, रोज, खजूर, पापडी, सीगरैला झीझा, इमली, बिल झोझरू, मोगरा, काला कैर, पिलवान, अर्जन, वजरदन्ति, कडीयाला, खीणा, देशी किकर, लिसोडा आदि निरन्तर विलुप्त होते जा रहे हैं।

समुदाय जिसके निम्न कारण मानते हैं:

- जंगलात विभाग की दखलन्दाजी
- ग्वाला द्वारा कन्दों की जड़ निकाल देना
- पशुओं की अधिक चराई
- जड़ी–बूटियों के महत्व में कमी
- औषधीय महत्व के वृक्षों निरन्तर तस्करी

औरण देवबणियों के संरक्षण में सरकार, समुदायों तथा स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका

औरण देवबणी संरक्षण हेतु कृपाविस ने पूरे प्रदेश में अनेकों क्षेत्रिय तथा राज्य स्तर कार्यशालाऐं आयोजित की। इन कार्यशालाओं में विभिन्न समूहों जिनमें सरकार, समुदायों, अकादमिक संस्थाऐं तथा स्वचेछिक संस्थाओं की भूमिकाऐं क्या हो इस पर भी चर्चाऐं होती रही हैं। जिसका सार नीचे दी गई सारणी में प्रस्तुत हैं।

जनवरी 2004 में अजमेर विश्वविद्यालय में कृपाविस तथा विश्व विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हुई कार्यशाला में अकादमी संस्थाओं ने अपनी भूमिका स्पष्ट करते हुए कहा कि हमें अरावली में पाये जाने वाली समस्त वनस्पितयों के अध्ययन करने होगें। तथा इस बात पर अपना और प्रयास बढ़ायेगे जिससे की समाप्त होने वाली वनस्पितयों पर विशेष ध्यान दिया जा सकें।

इस मुद्दे पर राजस्थान की अनेकों स्वैच्छिक संस्थाऐं भी एक जुट हो रही हैं तथा अपने – अपने स्तर पर कुछ

ओरण–देबणियों के स्वर्द्धन हेतु कार्यो में लगे हैं। वैसे सरकार ने भी ओरण–देबणियों सुध लेनी शुरु कर दी हैं। जैसा कि पिछली केन्द्रिय सरकार ने 'मरु गोचर योजना' के तहत पश्चिम राजस्थान के चयनित 10 जिलों में ओरण व गौचर विकसित करने की बात कही थी।

सरकार	समुदायों	स्वैच्छिक संगठन
सरकार जंगल की नितियों में सुधार / संशोधन कर समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करें।	ओरण–देवबणी के महत्व संप्रेषण / दायित्वों का निर्वाहन	दबाव–समुह तैयार करे ओरण देवबणियों से विलुप्त होती वृक्ष, पशु व पक्षियों की प्रजातियों का अध्ययन।
सरकार ओरण/देवबणियों के विकास तु सार्थक प्रयास व निति बनाये	स्वामित्व के प्रति जागरुक हो तथा पंचायते ओरण की महत्वता से परिचित होकर ग्राम योजना तैयार करें।	हेतु स्वेदनशील व जागरुकता का व्यापक प्रचार प्रसार
समस्त ओरण – देबणियों के सर्वेक्षण कराके चिन्हित करावें। तथा उन्हें कानूनी रुप से राजस्व दस्तावेजों में परिभाषित कर अलग वर्गीकरण में रखें। सरकार ओरण/देवबणी संरक्षण में सामाजिक न्याय / फैसलों को मान्यता दे	प्राकृतिक संसाधनों के प्रति नैतिक जिम्मेदारी एवं सामाजिक नियमों में आज के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन	वनस्पतिक गुणों की जानकारी। महत्व एवं उपयोगिता के बारे में बतलाना। तथा संरक्षण व प्रबन्धन पर प्रशिक्षण आयोजन करना।
ओरण / देवबणी संरक्षण एवं सर्वधन हेतु राज्य स्तर पर कार्यदल का गठन	प्राकृतिक संसाधनों का उचित एवं समान बटवारा एवं ओरण देवबणी हेतु ग्राम कोष की स्थापना	समन्वय का काम तथा ओरण देवबणी हेतु समाज सेवियों का नेतृत्व क्षमता विकास

'देवबणी ओरणों' पर वृक्षारोपण अभियान

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) एवं स्वैच्छिक संस्थान – जो वर्ष 1992 से ग्रामीण समुदायों को अपने प्राकृतिक संसाधनों के सुधार और विकास में लोगों की संगठित पहल को मजबूत बनाने के लिए कटिबद्ध है। प्राकृतिक संसाधनों के विकास के लिए वन संवर्द्धन विशेषकर परम्परागत जंगल प्रबन्धन में कृपाविस की विशेष रूचि रही है। इसी के तहत प्रत्येक वर्ष औरण देवबणी व अन्य सार्वजनिक भूमि पर वृक्षारोपण हेतु नर्सरी तैयार करना तथा पौधे रोपण करना, कृपाविस की मुख्य गतिविधियों में से एक हैं।

इस वर्ष भी कृपाविस द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ बख्तपुरा स्थित कृपाविस प्रशिक्षण केन्द्र पर जुलाई 16, 2005 से किया जायेगा। ओरण देवबणी जैसे परम्परागत जंगलों के पुनुरोत्थान हेतु व्यापक वृक्षारोपण की आवश्यकता है, क्योकि ओरण–देवबणियो की स्थिति पेड़ पौधों की दृष्टि से सन्तोष प्रद नही है तथा ओरण–देवबणियों से औषधीय महत्व के वृक्ष जैसे नीम, सालर, वट, पीपल, छितरीली धोक, कैर, शीरस, छीला, हिंगोट, बेलपत्र, सदाहरी पीले फूल, गूलर, पील, रोज, खजूर, पापडी, सीगरैला झीझा, इमली, बिल झोझर, मोगरा, काला कैर, पिलवान, अर्जन, वजरदन्ति, कडीयाला, खीणा, देशी किकर, लिसौडा आदि निरन्तर विलुप्त होते जा रहे हैं।

अत: देवबणी व औरणों के विकास में रुचि रखने वाले सभी ग्रामीणों, महात्माओं तथा सरकार से अनुरोध है कि आप बख्तपुरा स्थित कृपाविस नर्सरी से देवबणियों में वृक्षारोपण हेतु निःशुल्क पौधे ले सकते हैं। वैसे कृपाविस भी कुछ चुनिन्दा देवबणियों में खुद भी वृक्षारोपण करवायेगा।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), बख्तपुरा, अलवर (राज०) द्वारा जनहित में प्रसारित।
इस पत्रिका के लिए आर्थिक सहयोग Koningsschool Foundation से प्राप्त।
मुद्रक : प्रकाश प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, 9-A, मनु मार्ग, अलवर।